

मानव जीनोम : सम्भावनाएं और चुनौतियां

डॉ. दिनेश मणि

अभी तक यह खुशफहमी थी कि जीनोम अनुक्रम खोजने का काम पूरा होने के साथ ही हमें जानकारी हो जाएगी कि हम कौन हैं? क्यों बीमार होते हैं? बूढ़े क्यों होते हैं? लेकिन मानव जीनोम प्रोजेक्ट के लगभग पूरा होने के बावजूद हम इस ज्ञान से कोसों दूर हैं। प्रश्न यह है कि मानव जीनोम से सम्बंधित अनुसंधानों का सदुपयोग कैसे किया जाए?

हमें इससे क्या-क्या लाभ मिल सकते हैं या कहिए कि हम इसका फायदा कैसे उठा सकते हैं?

विगत बीस वर्षों में आणविक जीव विज्ञान तथा कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी में हुई उल्लेखनीय प्रगति के चलते बहुत-सी अनुवांशिक बीमारियों के जीन पहचाने जा चुके हैं। इस संदर्भ में विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे मानव जीनोम प्रोजेक्ट से सम्बंधित अनुसंधान अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि कहे जा सकते हैं। यह एक सुखद संयोग ही है कि जब वर्ष 2003 में मानव जीनोम प्रोजेक्ट पूर्ण होगा, वह साल वॉटसन और क्रिक द्वारा 1953 में डी.एन.ए. संरचना की खोज का स्वर्ण जयंती वर्ष होगा। दुनिया भर में इस प्रोजेक्ट को लेकर काफी उम्मीदें लगाई जा रही हैं।

आजकल मानवीय व्यवहार के लगभग सभी पहलुओं का जीन के साथ अटूट सम्बंध दिखाई देने लगा है। हर महीने कोई न कोई नई खोज, किसी न किसी जीन का सम्बंध मनुष्य के सामान्य व्यवहार से जोड़ती हुई दिखाई दे रही है। रक्त के डी.एन.ए. परीक्षण द्वारा लोगों के व्यक्तित्व को जानने की विधि खोजी जा रही है। इसी सब के चलते मानव जीनोम परियोजना का महत्व बहुत बढ़ गया है।

शुरुआत

मानव जीनोम परियोजना की औपचारिक शुरुआत 1990 में हुई थी। उस समय इसे पूरा करने के लिए 15 साल की समयावधि तय की गई थी। लेकिन तकनीकी क्षेत्र में आई क्रांति की बदौलत यह परियोजना पूर्व निर्धारित समय से दो साल पहले ही पूरी होने जा रही है।

हम सभी जानते हैं कि हमारा शरीर हजारों-लाखों जीवित इकाइयों (यानी कोशिकाओं) से बना हुआ है। प्रत्येक कोशिका इतनी छोटी होती है कि उसे देखने के

लिए हमें सूक्ष्मदर्शी का सहारा लेना पड़ता है। हमारे शरीर में कुल मिलाकर लगभग 1000 अरब (10^{10}) कोशिकाएं होती हैं। प्रत्येक कोशिका के अन्दर (खून की लाल कोशिका और प्लेटलेट को छोड़कर) एक केन्द्रक होता है और केन्द्रक के अन्दर धागेनुमा संरचना होती है जिसे गुणसूत्र कहते हैं। प्रत्येक केन्द्रक में 46 गुणसूत्र होते हैं। इसमें से 23 पिता से (शुक्राणु के जरिए) तथा 23 गुणसूत्र माता से (अण्डाणु के द्वारा) आते हैं।

ये गुणसूत्र प्रोटीन तथा न्यूक्लिक अम्ल से मिलकर बने होते हैं। इस न्यूक्लिक अम्ल को डी.एन.ए. (डी-ऑक्सीराइबो न्यूक्लिक एसिड) कहते हैं। न्यूक्लिक अम्ल की बुनियादी संरचनात्मक इकाई को न्यूक्लियोटाइड कहते हैं। अगर एक केन्द्रक के प्रत्येक गुणसूत्र का डी.एन.ए. निकालकर एक दूसरे से जोड़ दिया जाए तो वह 6 फीट लम्बा होगा। हर बार जब एक कोशिका का विभाजन होकर दो कोशिकाएं बनती हैं तो उसमें स्थित जीनोम भी दुगुना हो जाता है। कोशिका के विभाजन के समय डी.एन.ए. के दोनों तंतु अलग हो जाते हैं और न्यूक्लियोटाइड जोड़ी बनाने (या क्षार जोड़ी बनाने) के नियम के अनुसार प्रत्येक तंतु से एक नया समपूरक तंतु बनता है। अतः प्रत्येक नई कोशिका के डी.एन.ए. में एक नया और एक पुराना तंतु होता है। नया बना तंतु पुराने तंतु की हूबहू प्रतिलिपि होता है।

डी.एन.ए.

डी.एन.ए. चार मूल क्षारों से बना होता है; एडिनिन (A), थाइमिन (T) गुआनिन (G) तथा साइटोसिन (C)। डी.एन.ए. के एक तंतु का A दूसरे तंतु के T से तथा एक तंतु का G दूसरे तंतु के C से जुड़ा रहता है।

